<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

सांची विश्वविद्यालय में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

- **"हर पुरुष के अंदर होता है मां की ममता का तत्व"- डॉ मेहता**
- **"महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं संवेदनाएं चाहिए"- सुश्री अदिति गौड़**
- **"महिला और पुरुष से पहले इंसान होना ज़रूरी"- डॉ प्राची अग्रवाल**
- **"महिला को सामान्य मनुष्य की भांति देखा जाना चाहिए"- डॉ रितु श्रीवास्तव**
- **"महिला को उसके विचार और बौद्धिकता से आंका जाए"- नेहा सैनी**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर छात्रों और शिक्षकों द्वारा महिला कर्मचारियों का सम्मान एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती रेनू तिवारी ने सभी महिला कर्मचारियों और छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम में डीन डॉ नवीन कुमार मेहता ने मातृशक्ति की महत्ता और व्यक्तित्व विकास में मां की भूमिका पर बात रखी।

चीना भाषा विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. प्राची अग्रवाल ने कहा कि हमें महिला और पुरुषों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए क्योंकि हम सब इंसान हैं और हमें इंसान बनने की ज़रूरत है। श्रीमती नीलिमा चंद्रवंशी ने कहा कि महिलाओं की शिक्षा पर जोर देते हुएकहाकि पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक पीढ़ी को शिक्षित कर सकता है लेकिन एक महिला शिक्षित होती है तो वो कई पीढ़ियों को शिक्षित कर देती है।

विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक(प्रदर्शनी) सुश्री अदिति गौड़ ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं बल्कि संवेदनाएं चाहिए क्योंकि दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी को सशक्त करने से समाज सशक्त होगा और इस प्रकार देश सशक्त होता है।

इंडियन पेंटिंग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि दुनिया के प्रत्येक मनुष्य में 51 अनुपात 49 में महिला और पुरुष अथवा पुरुष और महिला के तत्व पाए जाते हैं। चिकित्सा शाखा की डॉ अंजलि दुबे ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं एवं छात्राओं से अपील की, कि महिलाएं किसी भी पद पर जाएं वे बस अपनी सहजता बनाए रखें।

चिकित्सा शाखा की ही डॉ रितु श्रीवास्तव ने कहा कि शिव के बिना शक्ति नहीं और शक्ति के बिना शिव नहीं। उनका कहना था कि महिला एक सामान्य मानक है वह दूसरा जेंडर नहीं है जैसा की पुरुष को प्रथम जेंडर बताया जाता है। डॉ श्रीवास्तव ने महिला दिवस पर एक कविता भी प्रस्तुत की।

विश्वविद्यालय के सभी विभागों से एक-एक छात्रा को मौका दिया गया कि वो महिला दिवास पर अपने विचार प्रकट करें। योग विभाग की छात्रा नेहा सैनी ने कहा कि महिलाओं और पुरुषों दोनों में ही बुद्धि, मन और मस्तिष्क की शुद्धता होनी चाहिए। नेहा ने कहा कि महिलाओं को उनके रंग और रूप से न आंका जाए बल्कि विचार और बौद्धिकता के आधार पर उनका आंकलन किया जाए।

अंग्रेज़ी विभाग की छात्रा मुस्कान सोलंकी ने सांची विश्वविद्यालय की सर्वप्रथम कुलपति डॉ शशि प्रभा कुमार और संस्कृत विभाग की पूर्व डीन डॉ. सुनंदा शास्त्री को भी महिला दिवस के मौके पर याद किया। धन्यवाद ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय के डीन डॉ नवीन मेहता ने जीबी शॉ के नाटक के माध्यम से बताया कि कैसे नाटक की महिला पात्र अपने निर्बल पति का सहयोग कर उसे आत्मसम्मान से जीना सिखाती है। इसी प्रकार से उन्होंने महिला सशक्तिकरण का चरित्र चित्रण करने वाले हैंडी गिब्सन के नाटक "A Dolls House"का ज़िक्र भी किया।

city भास्कर
BHOPAL MONDAY,11/03/2019

• सांची विश्वविद्यालय

• सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में छात्रों और शिक्षकों ने महिला कर्मचारियों का सम्मान और विचार गोष्ठी का आयोजन किया। यहां चिकित्सा शाखा की डॉ. रितु श्रीवास्तव ने कहा- शिव के बिना शक्ति नहीं, शक्ति के बिना शिव नहीं।

दैनिक जागरण रायसेन 9 मार्च 2019

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर जिले भर में हुए विभिन्न कार्यक्रम

सांची विश्वविद्यालय में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

जागरण, रायसेन

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर छात्रों और शिक्षकों द्वारा महिला कर्मचारियों का सम्मान एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती रेनूतिवारी ने सभी महिला कर्मचारियों और छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम में डीन डॉ नवीन कुमार मेहता ने मातृशक्ति की महत्ता और व्यक्तित्व विकास में मां की भूमिका पर बात रखी।

चीना भाषा विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. प्राची अग्रवाल ने कहा कि हमें महिला और पुरुषों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए क्योंकि हम सब इंसान हैं और हमें इंसान बनने की ज़रूरत है। श्रीमती नीलिमा चंद्रवंशी ने महिलाओं की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक पीढ़ी को शिक्षित कर सकता है लेकिन एक महिला शिक्षित होती है तो वो कई पीढ़ियों को शिक्षित कर देती है। विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक सुश्री अदिति गौड़ ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं बल्कि संवेदनाएं चाहिए क्योंकि दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी को सशक्त करने से समाज सशक्त होगा और इस प्रकार देश सशक्त होता है। इसके अलावा कार्यक्रम को डॉ सुष्मिता नंदी, डॉ अंजलि दुबे, डॉ रितु श्रीवास्तव ने भी संबोधित किया।

महिला ग्राम सभा का आयोजन

दीवानगंज। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर शुक्रवार को कस्बे में महिला ग्राम सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास तथा उनके कल्याण से संबंधित विषय पर चर्चा की गई। इसके साथ ही गांव में महिलाओं के सर्वांगीण विकास से संबंधित एवं ग्राम विकास योजना तैयार करने की कार्रवाई की गई। ग्राम सभा के पर्यवेक्षण के रूप में ज्ञानेश खरे उपस्थित रहे। महिला ग्राम सभा की अध्यक्षता सरपंच इमरती बाई ने की। कार्यक्रम में उप सरपंच मुकेश नायक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं गांव के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पुरुषों की सहानुभूति नहीं संवेदनाएं चाहिए : कुलपति

रायसेन। नवदुनिया प्रतिनिधि

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर शुक्रवार को छात्रों और शिक्षकों द्वारा महिला कर्मचारियों का सम्मान एवं विचार गोष्ठी का आयोजन कि या गया। विश्वविद्यालय की कु लपति रेनू तिवारी ने सभी महिला कर्मचारियों और छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम में डीन डॉ नवीन कु मार मेहता ने मातृशक्ति की महत्ता और व्यक्तित्व विकास में मां की भूमिका पर बात रखी। चीना भाषा विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. प्राची अग्रवाल ने कहा कि हमें महिला और पुरुषों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए। नीलिमा चंद्रवंशी ने कहा कि महिलाओं की शिक्षा

रायसेन। सांची विश्वविद्यालय में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस।

पर जोर दिया। अदिति गौड़ ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं बल्कि संवेदनाएं चाहिए।

इंडियन पेंटिंग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ सुमिता नंदी ने बताया कि दुनिया के प्रत्येक मनुष्य में 51 अनुपात 49 में महिला और पुरुष अथवा पुरुष और महिला के तत्व पाए जाते हैं। चिकि त्सा शाखा की डॉ अंजलि दुबे ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं एवं छात्राओं से अपील की, कि महिलाएं कि सी भी पद पर जाएं वे बस अपनी सहजता बनाए रखें।

चिकि त्सा शाखा की ही डॉ,रितु श्रीवास्तव ने कहा कि शिव के बिना शक्ति नहीं और शक्ति के बिना शिव नहीं। सभी विभागों से एक-एक छात्रा को मौका दिया गया कि वो महिला दिवास पर अपने विचार प्रकट करें। योग विभाग की छात्रा नेहा सैनी ने कहा कि महिलाओं और पुरुषों दोनों में ही बुद्धि, मन और मस्तिष्क की शुद्धता होनी चाहिए। नेहा ने कहा कि महिलाओं को उनके रंग और रुप से न आंका जाए बल्कि विचार और बौद्धिकता के आधार पर उनका आंकलन कि या जाए। अंग्रेी विभाग की छात्रा मुस्कान सोलंकी ने सांची विश्वविद्यालय की सर्वप्रथम कु लपति डॉ शशि प्रभा कुमार और संस्कृत विभाग की पूर्व डीन डॉ. सुनंदा शास्त्री को भी महिला दिवस के मौके पर याद किया। धन्यवाद ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय के डीन डॉ नवीन मेहता ने जीबी शॉ के नाटक के माध्यम से बताया कि कैसे महिला पात्र अपने निर्बल पति को आत्म सम्मान से जीना सिखाती है।

पत्रिका Sat, 09 March 2019
epaper.patrika.com/c/37494885

'हर पुरुष के अंदर होता है मां की ममता का तत्व'

महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं संवेदनाएं चाहिए

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सांची. भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर छात्रों और शिक्षकों ने महिला कर्मचारियों का सम्मान एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय की कुलपति रेनू तिवारी ने सभी महिला कर्मचारियों और छात्राओं को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम में डीन डॉ. नवीन कुमार मेहता ने

रायसेन. महिला शक्ति को किया सम्मानित।

मातृशक्ति की महत्ता और व्यक्तित्व विकास में मां की भूमिका पर बात रखी।

चीना भाषा विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. प्राची अग्रवाल ने कहा कि हमें महिला और पुरुषों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए, क्योंकि हम सब इंसान हैं और हमें इंसान बनने की जरूरत है। नीलिमा चंद्रवंशी ने महिलाओं की शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक पीढ़ी को शिक्षित कर सकता है, लेकिन एक महिला शिक्षित होती है, तो वो कई पीढ़ियों को शिक्षित कर देती है। अदिति गौड़ ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं, बल्कि संवेदनाएं चाहिए। क्योंकि दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी को सशक्त करने से समाज सशक्त होगा।

डॉ. सुष्मिता नंदी ने बताया कि दुनिया के प्रत्येक मनुष्य में 51 अनुपात 49 में महिला और पुरुष अथवा पुरुष और महिला के तत्व पाए जाते हैं। डॉ. रितु श्रीवास्तव ने कहा कि शिव के बिना शक्ति नहीं और शक्ति के बिना शिव नहीं।

सांची विश्वविद्यालय में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

By India City News, 8 March, 2019, 18:48

- "हर पुरुष के अंदर होता है मां की ममता का तत्व"- डॉ मेहता
- "महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं संवेदनाएं चाहिए"- सुश्री अदिति गौड़
- "महिला और पुरुष से पहले इंसान होना ज़रूरी"- डॉ प्राची अग्रवाल
- "महिला को सामान्य मनुष्य की भांति देखा जाना चाहिए"- डॉ रितु श्रीवास्तव
- "महिला को उसके विचार और बौद्धिकता से आंका जाए"- नेहा सैनी

indiacitynews. com

रायसेन।सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर छात्रों और शिक्षकों द्वारा महिला कर्मचारियों का सम्मान एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती रेनू तिवारी ने सभी महिला कर्मचारियों और छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। कार्यक्रम में डीन डॉ नवीन कुमार मेहता ने मातृशक्ति की महत्ता और व्यक्तित्व विकास में मां की भूमिका पर बात रखी।

चीना भाषा विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. प्राची अग्रवाल ने कहा कि हमें महिला और पुरुषों के मध्य विभेद नहीं करना चाहिए क्योंकि हम सब इंसान हैं और हमें इंसान बनने की ज़रूरत है। श्रीमती नीलिमा चंद्रवंशी ने कहा कि महिलाओं की शिक्षा पर जोर देते हुएकहाकि पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक पीढ़ी को शिक्षित कर सकता है लेकिन एक महिला शिक्षित होती है तो वो कई पीढ़ियों को शिक्षित कर देती है।

विश्वविद्यालय की सहायक निदेशक(प्रदर्शनी) सुश्री अदिति गौड़ ने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की सहानुभूति नहीं बल्कि संवेदनाएं चाहिए क्योंकि दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी को सशक्त करने से समाज सशक्त होगा और इस प्रकार देश सशक्त होता है।

इंडियन पेंटिंग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ सुष्मिता नंदी ने बताया कि दुनिया के प्रत्येक मनुष्य में 51 अनुपात 49 में महिला और पुरुष अथवा पुरुष और महिला के तत्व पाए जाते हैं। चिकित्सा शाखा की डॉ अंजलि दुबे ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं एवं छात्राओं से अपील की, कि महिलाएं किसी भी पद पर जाएं वे बस अपनी सहजता बनाए रखें।

चिकित्सा शाखा की ही डॉ रितु श्रीवास्तव ने कहा कि शिव के बिना शक्ति नहीं और शक्ति के बिना शिव नहीं। उनका कहना था कि महिला एक सामान्य मानक है वह दूसरा जेंडर नहीं है जैसा की पुरुष को प्रथम जेंडर बताया जाता है। डॉ श्रीवास्तव ने महिला दिवस पर एक कविता भी प्रस्तुत की।

विश्वविद्यालय के सभी विभागों से एक-एक छात्रा को मौका दिया गया कि वो महिला दिवास पर अपने विचार प्रकट करें। योग विभाग की छात्रा नेहा सैनी ने कहा कि महिलाओं और पुरुषों दोनों में ही बुद्धि, मन और मस्तिष्क की शुद्धता होनी चाहिए। नेहा ने कहा कि महिलाओं को उनके रंग और रूप से न आंका जाए बल्कि विचार और बौद्धिकता के आधार पर उनका आंकलन किया जाए।

अंग्रेज़ी विभाग की छात्रा मुस्कान सोलंकी ने सांची विश्वविद्यालय की सर्वप्रथम कुलपति डॉ शशि प्रभा कुमार और संस्कृत विभाग की पूर्व डीन डॉ. सुनंदा शास्त्री को भी महिला दिवस के मौके पर याद किया। धन्यवाद ज्ञापन के दौरान विश्वविद्यालय के डीन डॉ नवीन मेहता ने जीबी शॉ के नाटक के माध्यम से बताया कि कैसे नाटक की महिला पात्र अपने निर्बल पति का सहयोग कर उसे आत्मसम्मान से जीना सिखाती है। इसी प्रकार से उन्होंने महिला सशक्तिकरण का चरित्र चित्रण करने वाले हैंडी गिब्सन के नाटक "A Dolls House"का ज़िक्र भी किया।

Source ‼ जनसम्पर्क शाखा साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, भोपाल